कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 2

MJY-002

स्नातकोत्तर कला उपाधि (ज्योतिष)

(एम.ए.जे.वाई.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2023

एम.जे.वाई.-002 : सिद्धान्त ज्योतिष एवं काल

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *यह प्रश्न पत्र कुल* **दो** *खण्डों में विभक्त है। दोनों खण्ड अनिवार्य हैं। खण्डों में दिये गये निर्देशानुसार ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

खण्ड-'क'

निर्देश : निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के विस्तृत उत्तर दीजिए। 3×20=60

1. ज्योतिषशास्त्र के एक स्कन्ध के रूप में सिद्धान्त ज्योतिष का मूल्यांकन करते हुए वर्णन कीजिए।
2. ग्रहगति से क्या समझते हैं ? विस्तार से वर्णन कीजिए।
3. सूर्यादि ग्रहों के भगणों का वर्णन कीजिए।
4. सूर्य सिद्धान्त के अनुसार भूव्यास एवं भूपरिधि साधन की अवधारणा का वर्णन कीजिए।

5. ब्रह्म आयुमान एवं कल्पमान की अवधारणा का विस्तार से प्रतिपादन कीजिए।

6. ग्रहस्पष्टीकरण से आप क्या समझते हैं ? विस्तार से लिखिए।

खण्ड-'ख'

निर्देश : निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक के लिए **10** अंक निर्धारित हैं।

$04 \times 10 = 40$

7. भूगोल पर पुरियों, द्वीपसमूहों, पर्वतों और समुद्र की स्थिति की विवेचना कीजिए।

8. गोलबन्धाधिकार का वर्णन कीजिए।

9. भास्कराचार्य के मत में गोल क्या है ? प्रतिपादित कीजिए।

10. भगण किसे कहते हैं ? पठित अंश के आधार पर सूर्य, बुध एवं शुक्र ग्रहों के भगणों का उल्लेख कीजिए।

11. ग्रहगति के कारणों पर प्रकाश डालिए।

12. क्रान्ति एवं अक्षांश का स्वरूप क्या है ? उदाहरण से सिद्ध कीजिए।

13. उदयान्तर साधन से आप क्या समझते हैं ? पठित अंश के आधार पर वर्णन कीजिए।

14. काल की ज्योतिषीय अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।